Prabha: A Multidisciplinary Journal
ISSN: 3108-2726 (Online), Volume-2, Issue-4, (July - August) 2026

1857 के विद्रोह में चंद्रपुर के बाबूराव शेडमाके का योगदान: ऐतिहासिक विश्लेषण

प्रतिभा गोंड
शोधार्थी, इतिहास विभाग, समाज विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सारांश

1857 का विद्रोह सिर्फ संगठित राष्ट्रवादी आंदोलनों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध हुए स्थानीय एवं आदिवासी प्रतिरोधों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। मध्य भारत के गोंड बहुल क्षेत्र में बाबूराव पुल्लेसूर शेडमाके का विद्रोह इसी प्रकार के प्रतिरोध का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। बाबूराव शेडमाके 19वीं शताब्दी के मध्य में चांदा क्षेत्र के एक गोंड नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरे। 1857 के व्यापक विद्रोह की पृष्ठभूमि में बाबूराव शेडमाके ने स्थानीय गोंड शक्ति को संगठित कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। इस शोध-पत्र में बाबूराव शेडमाके के जीवन, उनके सामाजिक-राजनीतिक परिवेश, ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष के कारणों, उनके नेतृत्व में हुए सैन्य प्रतिरोध, स्थानीय सहयोग, गुरिल्ला युद्ध-पद्धति तथा ब्रिटिश दमन का ऐतिहासिक विश्लेषण प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किया गया है। विशेष रूप से 1857-1858 में नंदगांव घोसरी, सगनापुर, बामनपेठ तथा घोट क्षेत्र में हुए संघर्षों को औपनिवेशिक सत्ता और स्थानीय आदिवासी शक्ति के बीच संघर्ष के रूप में देखा गया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि बाबूराव शेडमाके का संघर्ष केवल एक स्थानीय विद्रोह के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह औपनिवेशिक सत्ता द्वारा स्थानीय राजनीतिक अधिकारों, संसाधनों और सामाजिक संरचनाओं में किए जा रहे हस्तक्षेप के विरुद्ध गोंड समाज की राजनीतिक प्रतिक्रिया थी।

मुख्य शब्द: बाबूराव शेडमाके, गोंड, चांदा, 1857 का विद्रोह, आदिवासी प्रतिरोध, औपनिवेशिक शासन, गोंडवाना।

प्रस्तावना

अक्सर जब भी इतिहासकार 1857 की क्रांति के बारे में वर्णन करते हैं, तो दिल्ली, बिहार, अवध, मेरठ, कानपुर, और झाँसी तक ही सीमित रहते हैं, जबकि आदिवासी क्षेत्रों में बहुत पहले ही ब्रिटिश शासन के प्रति प्रतिरोध प्रारंभ हो चुका था और 1857 की क्रांति में मध्य भारत के आदिवासियों ने भी संगठित होकर बगावत की थी। (नटराजन,2012)

मध्य भारत का गोंड क्षेत्र इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। गोंड समुदाय का इस क्षेत्र में लंबे समय से राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव रहा था। गोंडवाना के इस विस्तृत भूभाग पर गोंड जनजाति के शासकों का शासन भी रहा है। 15वीं से 17वीं सदी तक गोंड राजवंश अपने चरम बिंदु पर था। यह राजवंश मुख्यतः चार भागों में बँटा हुआ था। पहला - गढ़ मंडला का गोंड राजवंश, दूसरा – चांदा का गोंड राजवंश, तीसरा खेरला और चौथा – देवगढ़ का राजवंश था। तब ये सभी साम्राज्य मराठा शासन के अधीन भी आ गए थे परंतु उनकी स्वायत्तता बरकरार थी। (कोरेटी, 2016) औपनिवेशिक शासन के आगमन के साथ ही उनकी संस्कृति और उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप शुरू हो गया। ब्रिटिश औपनिवेशिक विस्तार ने स्थानीय सत्ता-संरचनाओं को अपने प्रशासनिक ढाँचे में समाहित करने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में गोंड शासकों और स्थानीय अभिजात वर्ग की स्वायत्तता कमजोर हुई। (भुक्या, 2013)

चांदा क्षेत्र भी इस परिवर्तन से प्रभावित हुआ। महाराष्ट्र सरकार के चंद्रपुर गजेटियर के अनुसार रघुजी भोंसले तृतीय की मृत्यु 1853 में हुई और उसके बाद चांदा ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया। दिसंबर 1854 में आर एस एलिस ने

चांदा के प्रथम ब्रिटिश प्रशासक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र स्टेट गजेटियर्स, 1973,पृ. 135) इसी परिवर्तित राजनीतिक परिस्थिति में बाबूराव शेडमाके का उदय हुआ। 1857 के विद्रोह में चांदागढ़ के बाबूराव शेडमाके के योगदान का अध्ययन क्षेत्रीय एवं जनजातीय पहलुओं को समझने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध आलेख से संबंधित उपलब्ध साहित्य को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें पहली- औपनिवेशिक प्रशासनिक दस्तावेज, दूसरी- क्षेत्रीय जीवनियाँ और तीसरी- आधुनिक शैक्षिक विश्लेषण है। चंद्रपुर के जिला गजेटियर (1909/1973) जैसे प्राथमिक स्रोत 1857 के विद्रोह की घटनाओं को ब्रिटिश दृष्टिकोण से दर्ज करते हैं, जहाँ बाबूराव शेडमाके और व्यंकटराव के अभियानों को "लूटपाट" और प्रशासनिक अव्यवस्था के रूप में देखा गया है। इसके विपरीत, प्रकाश गेदाम (2015) जैसे क्षेत्रीय जीवनी लेखकों ने बाबूराव के प्रारंभिक जीवन, उनकी 'घोटुल' शिक्षा और उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व को जनजातीय अस्तित्व के गौरव के रूप में प्रस्तुत किया है। भांग्या भुक्या (2013) का शोध कार्य इस दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जो गोंड राजाओं की 'साझा संप्रभुता' के पतन और ब्रिटिश 'अनन्य संप्रभुता' के थोपे जाने की प्रक्रिया का गहरा विश्लेषण करता है। दीपक गिरी (2025) का अध्ययन रेखांकित करता है कि कैसे मुख्यधारा के इतिहासकारों और साहित्यकारों ने बाबूराव जैसे जनजातीय नायकों को हाशिए पर रखा है, जिससे राष्ट्रीय इतिहास में एक बड़ा 'अनुसंधान अंतराल' उत्पन्न हुआ है। संक्षेप में, वर्तमान साहित्य औपनिवेशिक तथ्यों और क्षेत्रीय श्रद्धा के बीच बँटा हुआ है, जिसे एक एकीकृत ऐतिहासिक विमर्श की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य बाबूराव शेडमाके के जीवन, सामाजिक पृष्ठभूमि एवं उनके व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान देने वाली परिस्थितियों का अध्ययन करना है। इसके साथ ही बाबूराव शेडमाके के विद्रोह के प्रमुख कारणों, उनकी प्रकृति एवं उद्देश्य के साथ ही 1857–58 के विद्रोह के दौरान बाबूराव शेडमाके के नेतृत्व, सैन्य गतिविधियों एवं अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उनके संघर्ष का विश्लेषण करना इस अध्ययन का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इस शोध आलेख के लेखन को पूर्ण करने के लिए ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक और गुणात्मक शोध पद्धति का अनुसरण किया गया है। प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के आधार पर लिखित दस्तावेजों में जो विरोधाभास हैं, उनको सुलझाने के लिए स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

1857 का विद्रोह और बाबूराव शेडमाके

बाबूराव शेडमाके के संघर्ष को समझने के लिए सबसे पहले चंद्रपुर (चांदा) क्षेत्र की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है।

चंद्रपुर (चांदा) क्षेत्र की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि-

महाराष्ट्र का सबसे पूर्वी जिला चंद्रपुर (जिसे ऐतिहासिक रूप से 'चांदा' कहा जाता था) भौगोलिक रूप से गोदावरी बेसिन का हिस्सा है, जहाँ वर्धा, वैनगंगा और इंद्रावती जैसी प्रमुख नदियाँ प्रवाहित होती हैं और जिले का लगभग 70 प्रतिशत भाग उच्च श्रेणी के सागौन व बाँस के वनों से आच्छादित है। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ.34,43,77) 18° 41' से 20° 50' उत्तरी अक्षांश के बीच स्थित यह क्षेत्र अपनी खनिज संपदा, विशेषकर कोयला, लौह अयस्क और चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध है। (पृ.63-64) ऐतिहासिक दृष्टि से, यहाँ प्राचीन पाषाणकालीन अवशेषों के साथ-साथ मौर्य और वाकाटक राजवंशों के प्रमाण मिलते हैं, परंतु इसका सबसे महत्त्वपूर्ण अध्याय गोंड

राजवंश का शासन रहा, जिसकी स्थापना भीम बल्लाल सिंह ने लगभग 1247 ईस्वी में की थी। (मिश्र और गद्रे, 2008 पृ. 26)

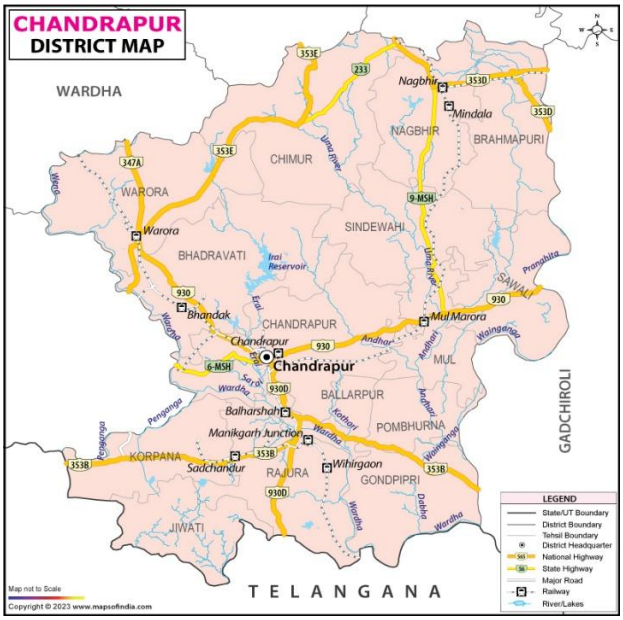

स्रोत – mapsofindia.com

19वीं सदी में चंद्रपुर-

19वीं सदी का समय चंद्रपुर में राजनीतिक और सामाजिक रूप से एक अत्यधिक उथल-पुथल और संक्रमण का काल था। इस दौरान यहाँ मराठा (भोंसले) शासन का अंत हुआ और ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता की स्थापना हुई, जिसका यहाँ के सामाजिक ताने-बाने पर गहरा प्रभाव पड़ा। 19वीं सदी के चंद्रपुर का राजनीतिक और सामाजिक विश्लेषण निम्नलिखित है।

राजनीतिक और सामाजिक जीवन

19वीं सदी में चंद्रपुर की राजनीति मुख्य रूप से तीन चरणों में विभाजित थी। इसमें पहला ब्रिटिश संरक्षण काल (1818-1830) था, 1818 में अंग्रेजों ने नागपुर के भोंसले शासक अप्पा साहेब को पराजित किया, जिसके बाद चंद्रपुर एक ब्रिटिश संरक्षित क्षेत्र बन गया। इस दौरान कैप्टन क्रॉफर्ड यहाँ के पहले अधीक्षक नियुक्त किए गए। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ. 158) दूसरा मराठा शासन की वापसी और अंत (1830-1853) का समय था,1830 में प्रशासन पुनः भोंसले राजा राघोजी तृतीय को सौंप दिया गया। (पृ. 152) हालांकि, 1853 में राघोजी तृतीय की निःसंतान मृत्यु के बाद, लॉर्ड डलहौजी के 'व्यपगत के सिद्धांत' के तहत चंद्रपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। तीसरा ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की स्थापना (1854 के बाद) का काल था, दिसंबर 1854 में मि. आर. एस. एलिस यहाँ के पहले डिप्टी कमिश्नर बने। (पृ. 157) अंग्रेजों ने यहाँ "अनन्य संप्रभुता" का सिद्धांत लागू किया, जिससे पारंपरिक गोंड राजाओं और ज़मींदारों की शक्तियाँ सीमित हो गईं और वे केवल नाममात्र के शासक रह गए। (भुक्या, 2013, पृ. 281,286)

19वीं सदी में चंद्रपुर का समाज विविध समुदायों और संस्कृतियों का संगम था। इस समय चंद्रपुर का समाज मुख्य रूप से मराठा, तेलुगु और गोंड समुदायों से मिलकर बना था। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973, पृ. 30) गोंड समुदाय यहाँ सदियों से प्रमुख रहा था और उनकी अपनी सामाजिक संस्थाएँ जैसे 'घोटुल' सक्रिय थीं। (पृ. 201) उपजाऊ और सिंचित भूमियों पर मुख्य रूप से ब्राह्मणों, कुनबियों और मराठों का अधिकार था, जबकि जनजातीय समुदाय (गोंड, मारिया) घने जंगलों की ओर विस्थापित हो गए थे। (भुक्या, 2013, पृ. 361) अंग्रेजों द्वारा वनों पर सरकारी नियंत्रण स्थापित करने से गोंडों के पारंपरिक अधिकारों का हनन हुआ, जिससे समाज में गहरा असंतोष फैला। भू-राजस्वः ब्रिटिश काल में लागू की गई नई भू-राजस्व व्यवस्था (जैसे मालगुज़ारी बंदोबस्त) ने पारंपरिक ज़मींदारों को भारी कर्ज में डुबो दिया और साहूकारों का प्रभाव बढ़ गया। (बलिदान दिवस, 2016) यह परिवर्तन केवल शासक बदलने तक सीमित नहीं था। औपनिवेशिक राज्य स्थानीय प्रशासन, राजस्व व्यवस्था तथा राजनीतिक अधिकारों को नए ढाँचे में व्यवस्थित करना चाहता था। इन्हीं परिस्थितियों में बाबूराव शेडमाके और स्थानीय आदिवासियों के मन में असंतोष उत्पन्न हुआ, जिसने विद्रोह का रूप धारण किया।

बाबूराव शेडमाके का परिचय

बाबूराव का जन्म 12 मार्च 1833 को चंद्रपुर (चांदा) जिले की अहेरी तहसील के किश्तपुर गाँव में हुआ था। वे मोलाम्पल्ली के एक सम्मानित और प्रभावशाली ज़मींदार पुलेश्वर बापू (जिन्हें पुलायसूर बापू भी कहा जाता था) और जुरजा कुंवर के सबसे बड़े पुत्र थे। उनके परिवार का गोंड समुदाय में बहुत सम्मान था और उनके ज़मींदारी क्षेत्र में 24 गाँव आते थे। (अमर स्वतंत्रता संग्रामी, 2020) उनकी प्रारंभिक शिक्षा गोंडों की पारंपरिक संस्था 'घोटुल' में हुई। यहाँ उन्होंने गोंड संस्कृति, सामाजिक मूल्यों और रीति-रिवाजों की बुनियादी शिक्षा प्राप्त की। घोटुल में उन्होंने गोंडी भाषा के साथ-साथ हिंदी और तेलुगु भी सीखी, घुड़सवारी व तीरंदाजी जैसी युद्ध कलाओं में निपुणता हासिल की। (गिरी, 2025, पृ. 251)

उनके पिता ने दूरदर्शिता दिखाते हुए उन्हें आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए रायपुर (छत्तीसगढ़) भेजा। बारहवीं की शिक्षा पूरी करने के बाद वे मोलाम्पल्ली लौट आए और अपने परिवार के ज़मींदारी कार्यों में हाथ बँटाने लगे। (बलिदान दिवस, 2016) यह समृद्ध पारंपरिक और आधुनिक पृष्ठभूमि ही थी जिसने उन्हें 1857 के संघर्ष के दौरान एक कुशल रणनीतिकार और साहसी जनजातीय नायक के रूप में तैयार किया। (आर्य,2025)

बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके ने 'जंगोम दल' का गठन 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध एक सशक्त हथियार के रूप में किया था। उन्होंने क्षेत्र के लगभग 500 जनजातीय युवाओं को एकजुट कर इस दल का गठन किया। इस सेना का मुख्य आधार गोंड समुदाय के युवा थे, लेकिन इसमें अन्य स्थानीय समुदायों के लोग भी शामिल थे। जंगोम दल के सैनिकों को छापामार युद्ध के लिए तैयार किया गया था। (आर्य,2025) इस दल के गठन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा थोपी गई नई भू-राजस्व व्यवस्था, प्रशासनिक परिवर्तनों और जंगलों पर औपनिवेशिक नियंत्रण का विरोध करना था। (भुक्या, 2013, पृ.283)

प्रमुख सैन्य अभियान और सामरिक विजय

राजगढ़ परगना की मुक्ति- मार्च 1858 तक, बाबूराव शेडमाके और उनके सहयोगी व्यंकटराव ने गोंडों और रोहिलों की एक शक्तिशाली संयुक्त सेना तैयार कर ली थी। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ. 158) इसी समय उन्होंने ब्रिटिश नियंत्रण वाले राजगढ़ परगना (जो उस समय का एक महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक क्षेत्र था) पर आक्रमण

किया और उसे सफलतापूर्वक अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त करा लिया। राजगढ़ की हार ने ब्रिटिश प्रशासन, विशेषकर तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर मि. क्रिक्टन को हतप्रभ कर दिया था। इस जीत से जनजातीय समुदाय का मनोबल बढ़ा और विद्रोही सेना को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। इसी के परिणामस्वरूप 13 मार्च 1858 को नंदगाँव घोसाड़ी में ऐतिहासिक युद्ध हुआ, जहाँ बाबूराव ने ब्रिटिश सेना को दोबारा पराजित किया। (आर्य,2025)

नंदगाँव घोसाड़ी का युद्ध (13 मार्च 1858)- मार्च 1858 के शुरुआती दिनों में बाबूराव की सेना द्वारा राजगढ़ परगना को अंग्रेजों से मुक्त कराने के बाद, तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर मि. क्रिक्टन अत्यधिक विचलित हो गया था। उसने विद्रोह को कुचलने के लिए चंद्रपुर से ब्रिटिश सेना की एक बड़ी और सुसज्जित टुकड़ी भेजी। (बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके,2001) बाबूराव शेडमाके ने अपने सहयोगियों और 'जंगोम दल' के वीर योद्धाओं के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना का डटकर मुकाबला किया और यहाँ भी अंग्रेजों को परास्त किया। (बलिदान दिवस, 2016)

सागनपुर और बामनपेठ- 13 मार्च 1858 को नंदगाँव घोसाड़ी के युद्ध में ब्रिटिश सेना की करारी हार के बाद, तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर मि. क्रिक्टन ने विद्रोह को किसी भी कीमत पर कुचलने के लिए चंद्रपुर से एक तीसरी और अधिक सुसज्जित सैन्य टुकड़ी को विद्रोहियों का पीछा करने के लिए भेजा। (बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके,2001) बाबूराव के नेतृत्व वाले 'जंगोम दल' और ब्रिटिश सेना के बीच 19 अप्रैल 1858 को सागनपुर में आमना-सामना हुआ। ये युद्ध अत्यंत भीषण थे क्योंकि ब्रिटिश सेना अब और अधिक सतर्क और आक्रामक होकर हमला कर रही थी। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ. 158) इन संघर्षों के परिणामों के संबंध में स्रोतों में भिन्नता मिलती है। क्षेत्रीय साहित्य और लेखों के अनुसार, बाबूराव के जंगोम दल ने इन दोनों स्थानों पर भी ब्रिटिश सेना को परास्त किया, जिससे अंग्रेजों का मनोबल पूरी तरह टूट गया। इसके विपरीत, चंद्रपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर इन दोनों संघर्षों को "अनिर्णायक युद्ध" के रूप में दर्ज करता है।

चुचगोंडी पर रणनीतिक प्रहार

1857 के विद्रोह के दौरान 29 अप्रैल 1858 को अहेरी ज़मींदारी के चुचगोंडी में ब्रिटिश टेलीग्राफ कैंप पर किया गया हमला बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके की सबसे बड़ी रणनीतिक सामरिक विजयों में से एक था। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ. 158) इस हमले का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों के संचार तंत्र को पूरी तरह ठप करना था ताकि वे विद्रोह को कुचलने के लिए बाहरी मदद न बुला सकें। 21 अप्रैल 1858 को बाबूराव ने अपने 'जंगोम दल' के साथ कैंप पर अचानक और भीषण आक्रमण कर दिया। (बलिदान दिवस, 2016) इस हमले में ब्रिटिश टेलीग्राफ ऑपरेटर मि. गार्टलैंड और मि. हॉल मारे गए। इस हमले के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने यह महसूस किया कि बाबूराव को केवल सैन्य बल से पकड़ना कठिन है। (बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके,2001)

घोंट का संघर्ष - 1857 के विद्रोह के दौरान 10 मई 1858 को घोट में संघर्ष हुआ; यह क्षेत्र बाबूराव के सबसे प्रमुख सहयोगी व्यंकटराव राजेश्वरराव की ज़मींदारी का हिस्सा था। (महाराष्ट्र सरकार, महाराष्ट्र राज्य गजेटियर्, 1973,पृ. 158) यह क्षेत्र विद्रोहियों के लिए एक रणनीतिक केंद्र और शरणस्थली के रूप में कार्य कर रहा था। कैप्टन शेक्सपियर ने व्यंकटराव को पकड़ने के उद्देश्य से घोट और अडापल्ली पर धावा बोला था। (पृ. 158) यद्यपि ब्रिटिश सेना आधुनिक हथियारों से लैस थी, लेकिन बाबूराव के 'जंगोम दल' ने अपनी छापामार युद्ध नीति और स्थानीय भौगोलिक ज्ञान का उपयोग करते हुए अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी; घोट का संघर्ष विद्रोहियों के अटूट साहस और उनके संगठनात्मक तालमेल का प्रमाण था। यही कारण है कि वर्तमान समय में घोट में 'वीर बाबूराव शेडमाके स्मारक' स्थित है, जो गोंड समुदाय के लिए एक तीर्थस्थल की तरह है और उनकी वीरता की याद दिलाता है। (आर्य,2025)

विद्रोह को सीधे सैन्य बल से दबाने में विफल रहने पर अंग्रेजों ने 'राजाओं को पालतू बनाने' की कूटनीति अपनाई। अहेरी की ज़मींदारनी लक्ष्मीबाई को उनकी ज़मींदारी जब्त करने की धमकी देकर बाबूराव को पकड़ने के लिए विवश किया गया। (भुक्या, 2013, पृ.314) लक्ष्मीबाई ने कुछ समय बीत जाने के बाद बाबूराव को निमंत्रण भेजकर घर बुलाया। लक्ष्मीबाई के महल में उनके आने से पहले ही अंग्रेजी सेना उनकी ताक में बैठी थी। अंततः, 18 सितंबर 1858 को बाबूराव को गिरफ्तार कर कप्तान क्रिस्टीन के हवाले कर दिया गया। (मीणा,2025, पृ.99)

शहादत और ऐतिहासिक विरासत- गिरफ्तारी के बाद बाबूराव को चांदा (चंद्रपुर) जेल लाया गया, जहाँ उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला। 21 अक्टूबर 1858 को मात्र 25 वर्ष की आयु में उन्हें चंद्रपुर जेल के सामने एक पीपल के पेड़ पर फाँसी दे दी गई। लोककथाओं के अनुसार, उनकी अजेय शक्ति के कारण फाँसी का फंदा चार बार टूटा था। (सक्सेना,2016, पृ.160)

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि बाबूराव शेडमाके का योगदान सिद्ध करता है कि 1857 का विद्रोह केवल एक सैन्य विद्रोह नहीं था, बल्कि यह जनजातीय नायकों द्वारा अपनी स्वतंत्रता और वन अधिकारों के लिए लड़ा गया एक विकेंद्रीकृत और महान राष्ट्रीय संघर्ष था। आज भी चंद्रपुर और गढ़चिरौली की लोक-चेतना में वे 'वीर बाबूराव' के रूप में जीवित हैं।

मूल्यांकन

बाबूराव पुल्लेसुर शेडमाके से संबंधित औपनिवेशिक एवं उत्तर-औपनिवेशिक दस्तावेज एक जटिल इतिहासलेखन प्रस्तुत करते हैं। ब्रिटिश प्रशासन ने उन्हें विद्रोही मुखिया के रूप में वर्गीकृत किया और उनके आदिवासी सैनिकों को स्थानीय अशांति का हिस्सा बताया। इसके विपरीत, आधुनिक क्षेत्रीय इतिहासलेखन में शेडमाके को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सक्रिय आदिवासी प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

आधुनिक स्मृति में बाबूराव शेडमाके

आधुनिक समय में स्थानीय संगठनों और आदिवासी समुदायों ने बाबूराव शेडमाके की स्मृति को संरक्षित किया है। उदाहरण के लिए, गढ़चिरौली में 21 अक्टूबर को उनकी शहादत की स्मृति से संबंधित आयोजन हर वर्ष किया जाता है। (आर्य,2025) ऐसे कार्यक्रमों ने उन्हें आदिवासी सक्रियता और स्वतंत्रता संघर्ष के प्रतीक के रूप में स्थापित किया है। वर्तमान समय में उनके नाम पर विभिन्न संस्थाएँ और स्मारक स्थापित किए गए हैं। जैसे - बाबूराव शेडमाके हाई स्कूल, गढ़चिरौली, वीर बाबूराव शेडमाके स्मारक, घोट, वीर बापूराव पुल्लेसुर शेडमाके फ्लाईओवर, वरोरा (आर्य,2025) तथा भारत सरकार द्वारा 2009 में जारी डाक टिकट (शहीदों के वंशजों, 2012) इत्यादि हैं। इन स्मारकों और संस्थानों ने उनकी ऐतिहासिक स्मृति को सार्वजनिक क्षेत्र में बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्रोत - प्रशासक, "बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके (कॉममोरेटिव पोस्टेज स्टाम्प)," *आईस्टैम्प गैलरी*, 12 मार्च 2001 और ईटीवी भारत, 11 अगस्त 2022

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के उन विस्मृत जनजातीय नायकों में से एक हैं, जिनका योगदान राष्ट्रीय फलक पर रानी लक्ष्मीबाई या मंगल पांडे के समकक्ष है। उनके विद्रोह का ऐतिहासिक महत्त्व केवल उनके सैन्य अभियानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जनजातीय अस्मिता, वन अधिकारों और स्वशासन की रक्षा के लिए किया गया एक संगठित प्रयास था।

अध्ययन से स्पष्ट है कि बाबूराव ने पारंपरिक गुरिल्ला युद्ध और आधुनिक रणनीतिक समझ का एक दुर्लभ समन्वय प्रस्तुत किया था। उनका बलिदान गोंडवाना क्षेत्र में आज भी जनजातीय गर्व और प्रतिरोध का सबसे बड़ा प्रतीक है। चूँकि भारत सरकार ने 2001 में उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया और स्थानीय स्तर पर उनके स्मारक बनाए गए हैं, इसलिए यह तथ्य सत्यापित होता है कि बाबूराव शेडमाके ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाबूराव शेडमाके के इतिहास से हमें पता चलता है कि 1857 की क्रांति केवल मैदानों का विद्रोह नहीं था, बल्कि मध्य भारत के घने जंगलों में भी स्वतंत्रता की ज्योति उतनी ही प्रखर थी।

संदर्भ ग्रंथ –

1- आर्य, प्रणय. 1 मई 2025. बाबूराव शेडमाके: गोंड चीफटेन्स 1857 रिबेलियन इन गढ़चिरौली अगेंस्ट द ब्रिटिश. द न्यूज़ डर्ट. https://www.thenewsdirt.com/post/baburao-shedmake-gond-chieftain-s-1857- rebellion-in-gadchiroli-againt-the-british

2- महाराष्ट्र सरकार, 1973. महाराष्ट्र स्टेट गजेटियर्स: चंद्रपुर डिस्ट्रिक्ट (संशोधित संस्करण). बॉम्बे: निदेशालय सरकारी मुद्रण, लेखन सामग्री और प्रकाशन.

3- गिरी, दीपक(संपादक). 2025. इंडियन ट्राइबल लिटरेचर: ए क्रिटिकल स्टडी. नई दिल्ली: मलिक एंड संस पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

4- बाली, सूर्या. 12 मार्च 2020. अमर स्वतंत्रता संग्रामी, क्रांतिकारी बाबूराव शेडमाके: आज 187 वीं जयंती पर विशेष. राउंड टेबल इंडिया. https://hindi.roundtableindia.co.in/?p=9013

5- प्रकाशक, 12 मार्च 2001. बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके (कॉममोरेटिव पोस्टेज स्टाम्प). आईस्टैम्प गैलरी. https://www.istampgallery.com/baburao-puleshwar-shedmake/

6- संपादक, 21 अक्टूबर 2016. बलिदान दिवस: जानिए, दो बार ब्रिटिश सेना को हराने वाले बाबूराव पुलेश्वर शेडमाके की कहानी. दलित दस्तक. https://www.dalitdastak.com/adiwasi-bahujannayak-baburao-puleshwar-shedmake-martyrs-day-2443

7- विशेष संवाददाता,16 दिसंबर 2012. शहीदों के वंशजों की सुध सरकार को नहीं. दैनिक भास्कर (नागपुर संस्करण). https://www.bhaskar.com/news/MH-the-government-is-not-in-charge-of-the-descendants-of-martyrs-4114263

8- भांग्या, भुक्या, 2013. द सबोर्डिनेशन ऑफ द सोवेरेंस: कॉलोनियलिज्म एंड द गोंड राजास इन सेंट्रल इंडिया 1818-1948. मॉडर्न एशियन स्टडीज. वॉल्यूम 47. नंबर 1. पृ.288-317. https://doi.org/10.1017/S0026749X120007

9- प्रकाश, मारुती मसराम. दिसंबर 2022. फॉरेस्ट लैंड राइट्स मूवमेंट ऑफ द भील ट्राइब इन महाराष्ट्र विद स्पेशल रेफरेंस टू डिस्ट्रिक्ट नंदुरबार (1960-2006). प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस.वॉल्यूम 81. पृ.1149-1157. https://www.jstor.org/stable/27388863

10- नटराजन, मीनाक्षी.2012.1857: भारतीय परिप्रेक्ष्य –2, सामयिक प्रकाशन.

11- चंद्रपुर जिला मानचित्र, https://www.mapsofindia.com/maps/Maharashtra/districts/Chandrapur.htm

12- संवाददाता, 21 अक्टूबर 2021. शाहिदवीर बाबुराव शेडमाके यांच्या शौर्यचा इतिहासप्रेरणादायी. लोकतंत्र की आवाज.चंद्रपुर. loktantrakiawaaz.co.in/2021/10/shahidvir-baburao-shedmake.html

13- अगस्त रीवोलुशन डे, शेवटच्या क्षणापर्यंत बाबूराव शेडमाके यांची इंग्रजांशी झुज, ईटीवी भारत, 11 अगस्त 2022, etvbhart.com/marathi/maharashtra/state/Chandrapur/ august-revolution-day-baburao-shedmake

14- कोरेटी, शमराव. 2016. सोशियो-कल्चरल हिस्ट्री ऑफ द गोंड ट्राइब्स ऑफ मिडिल इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटी, वॉल्यूम 6, नंबर 4, पृ. 288-292. 10.7763/IJSSH.2016.V6.659

15- मीना, जितेंद्र. 2025. राष्ट्र निर्माण में आदिवासी. अंबाउंड स्क्रिप्ट.

16- मिश्र, सुरेश. और गद्रे, प्रभाकर. 2008. चांदा का गोंड राज्य. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

17- सक्सेना, सुधीर. 2016. छतीशगढ़ में मुक्ति- संग्राम और आदिवासी. भारतीय ज्ञानपीठ.

18- भुक्या, बी. (2013). सबजुगेटेड नोमैड्स: द लम्बाडास अंडर द राज. ओरिएंट ब्लैकस्वान